महामति योगीश्वर पराशर
©मेरुशृंग
विप्रा जटावल्कलसंवृतः भस्मोद्धूलितसर्वांगस्त्रिपुण्ड्रांकितमस्तकः।
रुद्राक्षमालाभरणः सितयज्ञोपवीतवान् पराशरोनाम मुनिराजगाम ॥५९॥
अर्थात - मुनियों में श्रेष्ठ पराशर सिर पर जटाजूट एवं शरीर पर वल्कल वस्त्र धारण किये हुए थे। उन्होंने अपने सम्पूर्ण शरीर पर भस्म लगा रखी थी। उनके मस्तक पर त्रिपुण्ड्र का निशान चमक रहा था। वे (गले में) रुद्राक्ष की माला धारण किये हुए, पवित्र श्वेत यग्योपवीत् से सुशोभित हो रहे थे।
- स्कन्द पुराण, ब्रह्म खण्ड ३

■ भगवान पराशर द्वारा स्थापित 'पराशरेश्वर' महाशिवलिङ्ग का माहात्म्य -

(क) 'पराशरेश्वर' महालिङ्ग की महिमा।

(१) स्कन्द पुराण के अनुसार

(२) ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड ग्रन्थ के अनुसार

(३) स्थल पुराण करवीर माहात्म्य के अनुसार

(ख) 'पराशरेश्वर' शिवलिङ्ग की कथा का माहात्म्य।

(ग) 'रेवा तट' पर ०२ 'पराशरेश्वर' लिङ्गों के होने का स्कन्द महापुराण में उल्लेख।

(घ) काशी स्थित 'पराशर कुण्ड' तथा 'पराशरेश्वर' महालिङ्ग की उत्पत्ति की संक्षिप्त कथा। (सन्दर्भ - 'श्रीमाल पुराण')

(ङ) स्थल-पुराण 'करवीर माहात्म्य' के अनुसार पराशरतीर्थ का वर्णन

■ 'पराशरेश्वर' महालिङ्ग का विस्तृत विवरण...✍️

(क) स्कन्द महापुराण में वर्णित 'पराशरेश्वर' महाशिवलिङ्ग की महिमा -

(१) स्कन्द महापुराण के अनुसार -

॥स्कंद उवाच॥

ज्येष्ठेश्वरस्य परितो यानि लिंगानि कुंभज।

तानि पंचसहस्राणि मुनीनां सिद्धिदान्यलम् ॥१॥

पराशरेश्वरं लिंगं ज्येष्ठेशादुत्तरे महत्। 👈

तस्य दर्शनमात्रेण निर्मलं ज्ञानमाप्यते ॥२॥

तत्रैव सिद्धिदं लिंगं मांडव्येश्वरसंज्ञितम्।

न तस्य दर्शनाज्जातु दुर्बुद्धिं प्राप्नुयान्नरः ॥३॥

#अर्थात - स्कन्द (कार्तिकेय) ने कहा - 'ज्येष्ठेश्वर' के चारों ओर पाँच सहस्त्र शिवलिङ्ग हैं। वे सब मुनियों के बड़े ही सिद्धिदायक हैं। ॥१॥

👉 'पराशरेश्वर' नामक एक महालिंग 'ज्येष्ठेश्वर' के उत्तर भाग में विराजमान है, उसके केवल दर्शन-मात्र से ही निर्मल ज्ञान पाया जाता है। ॥२॥ 👈

उसी स्थान पर एक माण्डव्येश्वर नामक दूसरा लिंग भी है, जो सिद्धियों को प्रदान करता है। उसके दर्शन से मनुष्य दुर्बुद्धि नहीं होता। ॥३॥

- स्कन्दपुराण, खण्ड- ४ (काशीखण्ड), उत्तरार्ध, अध्याय: ०६५

(२) ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड के अनुसार -

ततश्च सिद्धचामुंडां दुर्गामीशसरोवरे।

पराशरेश्वरं दृष्ट्वा कमलं तीर्थमुत्तमम् ॥८२॥

#अर्थात - वसिष्ठ बोले - हे राजन् (मान्धाता) ! फिर वहां से सिद्धचामुंडा और देवी दुर्गा के सरोवर में जाना चाहिए। (तत्पश्चात) कमलातीर्थ तथा 'पराशरेश्वर' नामक अतिउत्तम तीर्थ के दर्शन करने चाहिए। 👈

- ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड, पूर्वार्ध, षोड़शाऽध्यायाख्य

(३) स्थल पुराण करवीर माहात्म्य के अनुसार -

पराशराभिधे कुण्डे ये स्नात्वा विधिपूर्वकम् ।

पराशरेश्वरं लिङ्गं पश्यन्ति शक्तिसंयुतम् || ३६ || 👈

#अर्थात - जो मनुष्य 'पराशर कुण्ड' में विधिपूर्वक स्नान करके 'पराशरेश्वर' लिङ्ग के दर्शन करता है, वह शक्ति-सम्पन्न बन जाता है। ॥३६॥ 👈

स्नात्वा पराशरे तीर्थे भक्त्या यः पूजयेन्नरः ।

पराशरेश्वरं भद्रे सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥१६ ॥ 👈

अर्थात - हे भद्रे ! जो मनुष्य पराशर तीर्थ में स्नान करके भक्तिपूर्वक 'पराशरेश्वर' (नामक महालिङ्ग की) पूजा करता है, वह सम्पूर्ण सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है।

- करवीर माहात्म्य (पद्म पुराण), स्थल पुराण

(ख) 'पराशरेश्वर' शिवलिङ्ग की कथा का माहात्म्य -

इत्युक्त्वा देवदेवशस्तस्मिँल्लिंगे लयं ययौ।

सविस्मयास्ततो विप्राः प्रातर्याता यथागतम् ॥८१॥

॥स्कन्द उवाच॥

तदा प्रभृति कुंभोत्थ लिंगं व्याघ्रेश्वराभिधम्।

ज्येष्ठेशादुत्तरेभागे दृष्टं स्पृष्टं भयापहम् ॥८२॥

व्याघ्रेश्वरस्य ये भक्तास्तेभ्यो बिभ्यति किंकराः।

यामा अपि महाक्रूरा जयजीवेति वादिनः॥८३॥

पराशरेश्वरादीनां लिंगानामिह संभवम्।

श्रुत्वा नरो न लिप्येत महापातककर्दमैः॥८४॥

#अर्थात -ऐसा कहने के अनन्तर महादेव उसी लिङ्ग में लीन हो गए। ब्राह्मण लोग प्रातःकाल अपने-अपने स्थान को चले गए। ॥८१॥

स्कन्द ने कहा - हे अगस्त्य ! तभी से वह लिङ्ग व्याघ्रेश्वर नाम से विख्यात हुआ। ज्येष्ठेश्वर के उत्तर भाग में उसके दर्शन और स्पर्शन करने से सब भय छूट जाते हैं। ॥८२॥

जो लोग व्याघ्रेश्वर के भक्त हैं, उनसे यमराज के बड़े क्रूर किंकर लोग भी जयजीव करते हुए डरते ही रहते हैं। ॥८३॥

👉 इन सब 'पराशरेश्वर' इत्यादि लिङ्गों की कथा सुनने से कोई मनुष्य महापापरूप कीचड़ में नहीं लिपटता। ॥८४॥ 👈

- स्कन्दपुराण, खण्ड- ४ (काशीखण्ड), उत्तरार्ध, अध्याय: ०६५

(ग) 'रेवा तट' पर ०२ 'पराशरेश्वर' लिङ्गों के होने का स्कन्द महापुराण में उल्लेख -

◆ 'पराशरेश्वर' - एक प्रमुख महा शिव-तीर्थ -

हे श्रेष्ठ ब्राह्मणों ! इस प्रकार रेवा के दो तटों के संगम पर, चार सौ प्रसिद्ध तीर्थ हैं।

त्रिशतं शिवतीर्थानि त्रयीस्त्रिंशत्समन्वितम् ।

तत्रापि व्यक्तितो वक्ष्ये शृणुध्वं तानि सत्तमाः ॥१०॥

मन्मथेशद्वयं चैव भृगुतीर्थद्वयं तथा ।

पराशरेश्वरौ द्वौ च अयोनीसंभवद्वयम् ॥२१॥ 👈

व्यासेश्वरद्वयं प्रोक्तं पितृतीर्थद्वयं तथा ।

नन्दिकेश्वरतीर्थे द्वे द्वौ च गोपेश्वरौ स्मृतौ ॥२२॥

#अर्थात - तीन सौ तैंतीस शिव तीर्थ हैं। हे श्रेष्ठ ! मैं इनका भी अलग-अलग उल्लेख करूंगा, जिन्हें आप सुनते हैं। ॥१०॥

👉 दो मन्मथेश और दो भृगुतीर्थ हैं। दो 'पराशरेश्वर' और दो अयोनीसंभव हैं। ॥२१॥ 👈

दो व्यासेश्वर हैं और दो पितृतीर्थों का उल्लेख किया गया है। दो नंदिकेश्वर तीर्थ हैं और दो गोपेश्वर तीर्थों को कहा गया है। ॥२२॥

- स्कन्दपुराण, अवन्तिखण्ड-रेवाखण्ड, अध्याय - २३१

#नोट - 👉 'पराशरेश्वर' शिवलिङ्ग (काशी खण्डोक्त शिवलिङ्ग) की वर्तमान स्थिति -

(काशीखण्डोक्त 524 शिवलिंगों की सूची में 200 अज्ञात हैं। वर्तमान में 324 शिव लिंग ही अस्तित्व में है।)

★ 'पराशरेश्वर' - काशीखण्डोक्त काशी का एक ज्ञात महा शिवलिङ्ग

● शिवलिङ्ग का नाम - 'पराशरेश्वर'

● काशी खण्ड अध्याय - ६५,

श्लोक संख्या - ०२

● अवन्तिखण्ड-रेवाखण्ड अध्याय - २३१, श्लोक संख्या - २१

● वाराणसी में अवस्थिति -

(१) भदैनी, लोलार्क, बी २/२१

(२) कर्णघण्टा तालाब, व्यासेश्वर के दक्षिण, के ६०/६६, सम्प्रति जल में।

(घ) श्रीमाल पुराण के अनुसार काशी स्थित 'पराशर कुण्ड' तथा 'पराशरेश्वर महालिङ्ग' की उत्पत्ति की कथा -

■ कथा का संक्षिप्त विवरण...✍️

★ राक्षसों के द्वारा अपने पिता के भक्षण की जानकारी प्राप्त होने के पश्चात भगवान पराशर अपनी माता को वचन देते हुए कहते हैं कि हे मात ! देवदेवेश्वर (शिव) की पूजा करके तथा चराचर सहित तीनों लोकों को दग्ध करके मैं क्षणभर में पिता का दर्शन कराता हूँ। तत्पश्चात् पितामह वसिष्ठ के द्वारा समझाए जाने पर उन्होंने सम्पूर्ण चराचर सहित तीनों लोकों को नष्ट करने वाले अपने विचार को त्याग दिया और राक्षसों के समूल नाश की ओर अपने ध्यान को केन्द्रित करते हैं।

★ महात्मा वसिष्ठ के शील युक्त वचनों से वेदवेताओं में श्रेष्ठ पराशर राक्षसों के समूल नाश को बीच में ही रोक देते हैं। अपने इन दूषित विचारों से उनका अंतःकरण शुद्ध नहीं हुआ। उसकी शुद्धता के उपाय हेतु उन्होंने काशी (वाराणसी) स्थित अपने आश्रम के समीप एक सुन्दर जल कुण्ड का निर्माण किया और शंकर भगवान की आराधना करने लगे। श्रेष्ठ मुनि पराशर ने एक बड़े शिवलिङ्ग की शास्त्रोक्त प्रतिष्ठा की और भगवान शिव की उग्र तपस्या में लीन हो गए। भगवान ब्रह्मर्षि पराशर द्वारा प्रतिष्ठित यह शिवलिङ्ग इस संसार में 'पराशरेश्वर' के नाम से विख्यात हुआ।

■ कथा का विस्तृत विवरण...✍️

■ भगवान वसिष्ठ द्वारा राजा मान्धाता को 'पराशरेश्वर' नामक अतिउत्तम तीर्थ के माहात्म्य के विषय में बताना -

वसिष्ठ बोले - हे राजन ! जिस जगह 'पराशरेश्वर' नामक अतिउत्तम तीर्थ है, वहां जाओ। वहां पर प्राचीन काल में महान् 'पराशर' नामक ऋषि राक्षसों के नाश हेतु अग्नि में लगातार आहुति दे रहे थे। उनको अभिचार-मारण युक्त यह काम करते देखकर मैं आदरपूर्वक 'पराशर' से इस प्रकार बोला - ॥१-२॥
हन्ता त्राता न कस्यापि कश्चिदस्तीहनिश्चितम् ।

यतः स्वकृतभुग्लोके नरोनित्यं न संशयः ॥३॥

#अर्थात - हे मुनि ! इस जगत में कोई किसी को मारने में समर्थ नहीं है तथा न ही कोई किसी की रक्षा करने में समर्थ है। किये गये कर्मों का फल मनुष्य को भोगना ही पड़ता है, इसमें कोई संशय नहीं। ॥३॥

तपोनाशयतिक्रोधः तमोनाशयति प्रज्ञां तपोनाशयतिबलम् ।
तस्मात्तम्परिवर्जयेत् ॥४॥

#अर्थात - क्रोध तप का नाश करता हैं तथा तम बल का नाश करता है, तपस्या का अहंकार बुद्धि को नष्ट कर देता है। अतः क्रोध का हर परिस्थिति में त्याग ही करना चाहिए। ॥४॥

जिन मनुष्यों को तपस्या करने से क्रोध उत्पन्न होता है उनको क्रोध सशरीर ठीक उसी प्रकार से जला डालता है जिस प्रकार से धूमकेतु वृक्षयुक्त जंगल को जला डालता है। ॥५॥

क्रोधः शस्त्रमलोहं च क्रोधः शत्रुरमूर्तिमान् ।

क्रोधश्चानिधनोवन्हि तस्मात्तं परिवर्जयेत् ॥ ६ ॥

#अर्थात - क्रोध तो इस संसार में बिना लोहे का शस्त्र है, क्रोध मनुष्यों का न दिखलाई देने वाला देहरहित शत्रु है। क्रोध बिना ईंधन की अग्नि है, इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को क्रोध का हर परिस्थिति में त्याग ही कर देना चाहिए। ॥६॥

इस प्रकार अनेक सान्त्वना युक्त नीति वचनों को सुनकर पराशर ऋषि प्रसन्न होकर, इस प्रकार से बोले। ॥७॥

पराशर बोले - हे तात ! आपके आदेश से मैं राक्षसों का कुल नाश करने के कर्म से विरक्त हो गया हूँ परन्तु मैंने विविध स्तोत्रों द्वारा आराधना करके राक्षसों के कुल को जलाकर भस्म कर देने वाली सात तेजस्वी शक्तियों का यहां आह्वान कर दिया हैं। अतः अब आप उसका निवारण कैसे करे ? यह बतावे। ॥८-९॥

वसिष्ठ बोले - हे राजन् ! पराशर के इस प्रकार कहने पर मैंने नम्रतापूर्वक उन तेजस्वी शक्तियों को प्रणाम करके इस प्रकार कहा - हे मातृ शक्तियों ! आप प्रसन्न होकर ऐसा कार्य करें जिसका आश्रय करके करोड़ों दैत्य चिन्ता रुपी ज्वर से मुक्त हो जाये। ॥१०-१२॥

देवियां बोलीं - हे ऋषि ! आपके वचन से हम राक्षस कुल के नाश करने के कर्म से विरक्त हुए पर अब से हम यहीं इस स्थान पर निवास करेंगी जिससे हमको शंकर का सान्निध्य प्राप्त होगा। ॥१३॥

वसिष्ठ बोले - इस प्रकार से दिव्य शक्तियों के वचन सुनकर पराशर बोले। ॥१४॥

पराशर बोले - हे देवियों ! आपके स्नेह युक्त वचनों को सुनकर मैं संतुष्ट हूं और अब यहां पर भगवान शंकर की उपासना करूंगा। आप सभी दिव्य शक्तियों मेरे आश्रम में ही निवास करे। ॥१५॥

वसिष्ठ बोले - 'तथावस्तु' कहकर दिव्य शक्तियों ने वहीं स्थिति कर ली तथा पराशर जिस स्थान से आया था वहीं वापस चला गया। 👉 तत्पश्चात् उन देवियों के लिये, एक सुन्दर जल कुण्ड के निर्माण की इच्छा से पराशर शंकर भगवान की आरधना करने लगे। श्रेष्ठ मुनि पराशर ने एक बड़े शिवलिङ्ग की शास्त्रोक्त प्रतिष्ठा की तथा पुष्प, धूप, दीप, नेवैद्य से उसका पूजन करने लगे। 👉 बुद्धिमान एवं पवित्र चरित्र वाले पराशर, नासाग्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुये, तीन समय स्नान करते हुये दसों इन्द्रियों पर नियन्त्रण करते हुये, वृक्ष से गिरे हुये जीर्ण पत्तों का भोजन करते हुये, शिवजी का ध्यान करते-करते, तपस्या से लकड़ी के समान कृशकाय हो गये। 👈 फिर श्रेष्ठ द्रव्यों का अग्नि में हवन किया। पांच वर्ष पश्चात् सर्वव्यापी भगवान शंकर अपने तेज से आश्रम भूमि को प्रकाशित करते हुये दिव्य स्वरुप में प्रकट हुये। ॥१६-२१॥

हे देवर्षि ! जो कुछ तेरे मन में हो वह वर मांगों, मैं तुम पर प्रसन्न हूँ अतः अत्यन्त दुर्लभ वर भी दूंगा। ॥२२॥

पराशर बोले - हे शंकर ! मेरे (माता-) पिता का राक्षसों ने भक्षण किया। जिससे क्रोध युक्त होकर मैं निन्दित कर्म को करने लगा परन्तु महात्मा वसिष्ठ के शील युक्त वचन से मैंने यह विचार त्याग दिया। मेरे इन् दूषित विचारों से मेरा अंतःकरण शुद्ध नहीं हुआ। उसकी शुद्धता का उपाय करें। ॥ २३-२४॥

महादेव बोले - हे ऋषि ! पिता की मृत्यु से प्राप्त हुये क्रोध व शोक के कारण तुम्हें कोई दोष नहीं, तुम्हारे यज्ञ से मैं प्रसन्न हुआ। प्रत्येक स्थल पर यज्ञ करने से सिद्धि नहीं मिलती। अतः जो देवताओं को भी दुर्लभ हो ऐसा वर मांग। ॥२५-२६॥

पराशर बोले - हे देवेश ! जो आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो सभी दिव्य मातृ शक्तियों के साथ यहीं निवास करें। ॥२७॥

महादेव बोले - हे तपोधन ! तेरी भक्ति के कारण यह स्थान निश्चय ही सभी मातृ शक्तियों के साथ मेरे रहने योग्य है। ॥ २८॥

एकाग्रमनसोभूत्वा ये नमिष्यन्ति मामिह।

नतेषां भयकारिण्यः कदाचिदद्यमयातनाः ॥२९॥

#अर्थात - जो मनुष्य इस स्थान पर एकाग्रचित से मुझे नमस्कार करेगा उसको किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। जो मनुष्य इस कुण्ड में सावधान होकर स्नान करेगा और माताओं को नमस्कार करेगा, वह सीधा स्वर्गलोक को प्राप्त करेगा, इसमें कोई संशय नहीं। ॥२९-३०॥

देवियाँ बोली - हे पराशर ! जो मनुष्य इस स्थान पर आकर हमारी नित्य पूजा करेगा उनको प्रसन्न होकर हम खूब धन एवं दुर्लभ कीर्ति प्रदान करेंगी। ॥३१॥

अस्मिन्कुण्डे नरः स्नात्वा दृष्टादेवं महेश्वरम्।

अस्यान्द्रक्ष्यति यत्नेन न तस्यास्ति रिपोर्भयम् ॥३२॥

#अर्थात - जो मनुष्य इस कुण्ड में स्नान करके भगवान शंकर के दर्शन करेगा और यत्नपूर्वक हमारे दर्शन भी करेगा, उसको किसी भी प्रकार के शत्रु का भय नहीं रहेगा। वैशाख मास की चतुर्दशी को पराशर ऋषि के इस आश्रम में शंकर का जो श्रद्धा पूर्वक दर्शन करेगा, वह पुनर्जन्म के बन्धन से मुक्त हो जाएगा। ॥३२-३३॥

वसिष्ठ बोले - हे नृप ! इस प्रकार कहकर दिव्य शक्तियां और देवों के देव शंकर पराशर ऋषि को उग्र तपस्या का फल देकर अंतर्ध्यान हो गए। ॥३४॥

- श्रीमाल पुराण, अध्याय-६१, पराशरेश महात्म्य

(ङ) स्थल-पुराण 'करवीर माहात्म्य' के अनुसार 'पराशरतीर्थ' का वर्णन

पाराशरं परं लिङ्गं संस्थाप्य विधिपूर्वकम्।

सत्यवतीश्वरीं देवीं संस्थाप्य च यथाविधि ॥३४॥

गिरेर्नामापि संचक्रे पाराशराश्रमेत्यनु ।

वरं ददौ च तत्क्षेत्रे स्वनाम्ना भूषिते शुभे || ३५ ||

#अर्थात - मुनि पराशर और देवी सत्यवती ने (उस) महालिङ्ग को गिरी नामक पर्वत पर बने हुए (अपने) आश्रम में विधिपूर्वक स्थापित करके उस क्षेत्र को वर दिया और उसे अपने शुभ नाम (पराशरतीर्थ/ पराशरक्षेत्र) से भूषित किया। ॥३४-३५॥